'Idealism'
(प्रत्ययवाद)

'प्रत्ययवाद' वह तत्वशास्त्रीय सिद्धान्त है जो मूलतत्व के रूप में प्रत्यय को स्वीकार करता है और उसके स्वरूप को चेतन या आध्यात्मिक मानता है। इसके अनुसार विश्व की आधारभूत सत्ता - चैतन्य प्रत्यय आत्मा या मन है। यह मानता है कि जो पदार्थ भौतिक जान पड़ते हैं वह भी प्रत्ययात्मक हैं आत्मा या मन के विकार हैं। आत्मा ही एकमात्र परमार्थ तत्व है। वह भूत पर निर्भर नहीं करता किन्तु भूत को आत्मा का मुंह जोहना पड़ता है।

तत्वशास्त्रीय सिद्धान्त के रूप में प्रत्ययवाद भौतिकवाद का विरोधी सिद्धान्त है। प्रत्ययवाद किसी भी पदार्थ को भौतिक नहीं मानता है। कोई भी पदार्थ जड़ नहीं है सभी के सभी पदार्थ चेतन हैं सम्पूर्ण विश्व मानसिक प्रत्ययों का संकलन है।

प्रत्ययवाद के अनुसार विश्व की व्याख्या प्राकृतिक नियमों के द्वारा नहीं की जा सकती है क्योंकि प्रकृति की व्याख्या के लिए प्राकृतिक नियम पर्याप्त नहीं है। देशकाल में व्याप्त जगत अपूर्ण एवं परतन्त्र है अतः उसकी व्याख्या के लिए आत्मा या चैतन्य की आवश्यकता होती है

क्योंकि वही विश्व का आधार है।
प्रत्ययवाद ईश्वरवाद का समर्थक है। इसकी मान्यता है कि - आध्यात्मिक सत्ता के रूप में ईश्वर का मौलिक तत्व है सम्पूर्ण विश्व का निर्माण ईश्वर की प्राप्ति के लिए हुआ है। अतः अधिकांश प्रत्ययवादी ईश्वर को परम तत्व मानते हैं।
प्रत्ययवाद यंत्रवाद का विरोधी है क्योंकि विश्व प्रक्रिया को वह प्रयोजनपूर्ण मानता है। इसके अनुसार आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति के लिए ही विश्व का विकास होता रहता है।
प्रत्ययवाद और भौतिकवाद मूलतत्व के स्वरूप को एकात्मक मानते हैं। किन्तु इनका एकवाद परस्पर विरोधी है। जड़ चेतन का द्वैत किसी को स्वीकार नहीं है किन्तु इस द्वैत का परिहार वे विपरीत तरीके से करते हैं क्योंकि प्रत्ययवाद चेतन में जड़ का अंतर्भाव करता है तो भौतिकवाद जड़ में चेतन का। इसप्रकार मूलतत्व की प्रकृति को प्रत्ययवाद सिर्फ चेतन मानता है और भौतिकवाद सिर्फ भौतिक।
चूँकि प्रत्ययवाद

02 SUNDAY

भौतिकवाद का विरोधी सिद्धान्त है इसलिए पाश्चात्य और भारतीय दोनों दर्शनों में इसके उदाहरण मिलते हैं। पाश्चात्य दर्शन में प्रत्ययवाद के तीन प्रभेद देखने को मिलते हैं—

1. आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद (Subjective Idealism)
2. वस्तुनिष्ठ प्रत्ययवाद (Objective Idealism)
3. निरपेक्ष प्रत्ययवाद – (Absolute Idealism)

1. आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद वह तत्वशास्त्रीय सिद्धान्त है जो ससीम आत्माएं और उसके प्रत्यय को परमार्थ मानता है। इसे आत्मनिष्ठ इसलिए कहा गया कि यह वस्तुनिष्ठ आत्मा में विश्वास नहीं करे। दुनिया में जितने भी पदार्थ हैं वे सभी प्रत्ययों के संकलन हैं वे सभी प्रत्यय ससीम आत्माओं के हैं। प्रत्यय का अस्तित्व मन के अन्दर होता है इसलिए सभी के सभी पदार्थ मानसिक हैं।

बर्कले आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद के प्रवर्तक माने जाते हैं। इनके अनुसार सभी वस्तुओं को सीमित गुणों का समूह भर मानना प्रमाण संगत है।

जब हम कहते हैं कि

यह पदार्थ शक्कर है तो इसका मतलब यही होता है कि वह उजलापन, मीठापन, करवापन आदि गुणों का संघात है। खूब प्रयत्न करने पर भी गुणों के अतिरिक्त शक्कर के अन्दर और कुछ भी नहीं मिलेगा। सिर्फ मानसिक अभ्यास वश हम समझते हैं कि गुणों से भिन्न 'शक्कर' नाम का कोई भौतिक पदार्थ है जो उनका आधार है। इसप्रकार सभी गुण आत्मा के अनुभव पर आश्रित हैं। बर्कले की प्रसिद्ध उक्ति है – Esse est Percipi अर्थात प्रत्येक पदार्थ अपने अस्तित्व के लिए आत्मा पर आधारित है। आत्मा का ज्ञान अंतर्बोध (Notion) द्वारा होता है।

बर्कले का आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद अनेक दुर्बलताओं से भरा है। सभी पदार्थों को ससीम आत्माओं पर आश्रित मानना उचित नहीं है। यदि हम देखते हैं कि एक विकराल सर्प मेरी ओर आ रहा है तो आँख बन्द करने पर अनुभव के अभाव में उसकी सत्ता मिट नहीं जाती है बल्कि वह बरकरार रहती है। बर्कले ने स्वयं आगे चलकर अपने

गत की दुर्बलताओं को महसूस किया और इन दुर्बलताओं से बचने के लिए वस्तुनिष्ठ प्रत्ययवाद की शरण ली।

2. वस्तुनिष्ठ प्रत्ययवाद

प्रत्यय का वह भेद है जो प्रत्यय को सीमित नहीं मानकर असीम मानता है। प्रत्यय अपने अस्तित्व के लिए अनुभवकर्ता पर आश्रित नहीं है बल्कि इनका अपना अस्तित्व होता है। वस्तुनिष्ठ प्रत्ययवाद के समर्थक (प्लेटो) है। प्लेटो के अनुसार प्रत्यय वह है जो किसी वर्ग विशेष का सार तथा सामान्य गुण है। जैसे- Horse का सार और सामान्य गुण है Horseness प्रत्यय कभी नष्ट नहीं हो सकता। प्लेटो के अनुसार प्रत्यय संख्या में अनेक हैं। वे प्रत्ययों के समूह को वास्तविक मानते हैं। प्लेटो प्रत्यय की पूर्णता के आधार पर सबसे अधिक पूर्ण प्रत्यय को ऊपर अपूर्ण प्रत्यय को नीचे रखते हैं। सभी प्रत्यय शुभ प्रत्यय को प्राप्त करने के लिए विकसित होते रहते हैं। प्लेटो के अनुसार प्रत्यय की अनेक विशेषताएँ हैं— (1) Ideas are substance (2) Ideas are Universal (3) Ideas are of the nature of thought.

(3) निरपेक्ष प्रत्ययवाद— निरपेक्ष प्रत्ययवाद परमतत्व को वस्तुनिष्ठ

प्रत्ययवाद ने बाह्य असीम और सार्वभौम मानते हुए निरपेक्ष घोषित करता है।

अनुमते जगत का आध्यात्मिक परमतत्व के लिए आवश्यक है और परमतत्व का अनुभव जगत के लिए। निरपेक्ष प्रत्ययवाद के समर्थक हीगल हैं। वे मानते हैं कि परम तत्त्व बुद्धि है। बुद्धि का विकास द्वन्द नियम के अनुसार होता है। ~~[illegible]~~ क्रम में पहली धारणा को वाद, दूसरी को प्रतिवाद और समन्वय करनेवाली को संवाद कहते हैं। इस क्रम का अन्त एक सर्वांगपूर्ण धारणा में होता है। इस अंतिम धारणा को हीगल पूर्ण प्रत्यय कहते हैं।

भारतीय दर्शन में प्रत्ययवाद का अत्यधिक समर्थन योगाचार मत और शंकराचार्य के अद्वैतवाद में मिलता है।

1. योगाचार मत: योगाचार दर्शन बौद्ध दर्शन का एक सम्प्रदाय विशेष है। प्रत्ययवादी होने से इसे विज्ञानवादी भी कहते हैं। योगाचार मत केवल चित्त (Mind) को ही परमार्थ तत्व मानता है। चित्त विभिन्न मानसिक अवस्थाओं या विज्ञान-प्रवाह का संघात है। इसके अनुसार संसार के विभिन्न व्यक्तियों का विज्ञान ही परमतत्व है इसलिए [illegible]

मनपर निर्भर मत के प्रत्ययों का समूह मात्र है। यह मत बर्कले के मत से मिलता जुलता है। किन्तु बर्कले स्थायी द्रव्य के रूप में ससीम आत्मा को और पीछे ईश्वर को मान लेते हैं किन्तु विज्ञानवाद केवल विज्ञान को मानता है और उसे स्थायी आत्मा नहीं बल्कि मनो दशाओं का संघात मात्र समझता है।

2. अद्वैतवाद या शंकर मत — अद्वैतवाद के अनुसार परम तत्त्व ब्रह्म है। ब्रह्म को वह एक अनन्त निर्गुण निरपेक्ष तथा चिरंतन मानता है। भूत वर्तमान और भविष्य तीनों काल में उसकी सत्ता विद्यमान रहती है इसलिए वह शाश्वत है। जिस प्रकार अविद्या या अज्ञान के चलते अंधेरे में रस्सी सर्प जैसी दीखती है उसी प्रकार ब्रह्म अविद्या के कारण विश्व के रूप में प्रतीत होता है। ब्रह्म ज्ञान होने पर विश्व का भ्रम मिट जाता है और सिर्फ ब्रह्म ही सत्य रह जाता है। ब्रह्म - ज्ञान अपरोक्षानुभूति में होता है। व्यक्तिगत आत्मा अपने अपने शुद्ध रूप में ब्रह्म से तत्त्वतः अभिन्न है इसलिए ब्रह्म-ज्ञान और आत्मज्ञान एक ही है। इसमें ब्रह्म और आत्मा के अद्वैत का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है।

प्रत्ययवाद विश्व को तत्वतः आध्यात्मिक और अभौतिक मानता है किन्तु भौतिक जगत अपने अस्तित्व का प्रमाण बार-बार हमारे अनुभव को देता रहता है। प्रत्ययवाद चाहता है कि अनुभव के सच्चे स्वरूप को समझने पर वह आध्यात्मिक सिद्ध होता है। प्रत्ययवाद के समर्थन में उक्तियाँ दी गयी है जो इसप्रकार है —

1. प्रत्ययवाद के लिए बर्कले का तर्क बहुत प्रसिद्ध है। यह तर्क उनकी ज्ञान मीमांसा का निष्कर्ष है। वे ज्ञान की उत्पत्ति अनुभव से मानते हैं। अनुभव गुणों का होता है और गुण मन के प्रत्यय है, इसलिए अनुभूत वस्तुओं का सत्य रूप प्रत्ययात्मक है। अतः सभी पदार्थ

प्रत्ययों के समूह है। प्रत्ययों की उत्पत्ति आत्मा से ही हो सकती है क्योंकि वह आध्यात्मिक है। इसलिए विश्व के मूल में एक परम आत्मा या ईश्वर को मानना आवश्यक है क्योंकि कोई ससीम आत्मा इतने बड़े विशाल विश्व का कारण नहीं हो सकता। इन तर्कों द्वारा

बर्कले प्रत्ययवाद और ईश्वरवाद को प्रतिष्ठित करते हैं।

2. कुछ प्रत्ययवादी ज्ञान की संभावना से विश्व की आध्यात्मिकता सिद्ध करते हैं। ज्ञान विश्व का होता है, ज्ञान आध्यात्मिक है, इसलिए विश्व भी अवश्य ही आध्यात्मिक होगा अन्यथा उसका ज्ञान असंभव हो जायगा।

3. हीगल ने विश्व की व्याख्येयता के आधार पर भी प्रत्ययवाद की पुष्टि की है। दर्शन और विज्ञान यह मानकर चलते हैं कि विश्व की व्याख्या संभव है। विश्व को व्याख्येय मानने का अर्थ है कि वह बौद्धिक नियमों के अनुसार संचालित है, बौद्धिक नियम बौद्धिक पदार्थ का ही संचालन कर सकते हैं।

4. ग्रीन ने विश्व के व्यवस्थित रूप के आधार पर प्रत्यय-वाद का मंडन किया है। वे कहते हैं कि विश्व एक समष्टि है जिसमें अनेक पदार्थ परस्पर संबंध होकर अनेक तत्वों को नष्ट किए बिना ही अपनी एकता बनाए रखते हैं। ग्रीन कहते हैं कि अनुभव बताता है कि ऐसी

विचित्र रचना स्थापित करने वाला मन या आत्मा ही है। इसलिए विश्व के मूल में आत्मा को मानना पड़ेगा।

5. प्रयोजनवादी विचारक विश्व में व्याप्त नियम वर्तिता और सामंजस्य के आधार पर प्रत्ययवाद को प्रमाणित करते हैं। सभी घटनाएँ विशिष्ट क्रम से होती है। विश्व के इस सामंजस्य की व्याख्या तभी हो सकती है जब इसके मूल में बुद्धि या चेतन तत्व को स्वीकार किया जाय क्योंकि अनुभव यही बताता है कि बिना बुद्धि के पथ-प्रदर्शन को कोई व्यवस्थित रचना नहीं हो सकती।

6. भारतीय प्रत्ययवादी शंकराचार्य ने भी बड़े ही मौलिक तरीके से मूलतत्व को चेतन प्रमाणित किया है। वे कहते हैं कि वही पदार्थ मूलतत्व कहा जा सकता है जो त्रिकाल सत्य और सर्वान्तर्यामी हो। विश्व का सर्वव्यापी तत्व शुद्ध सत्ता है जो चेतन है क्योंकि सभी पदार्थों में सत्ता और चैतन्य विद्यमान है। अतः मूलतत्व चेतन है।

अनेक दार्शनिकों ने प्रत्ययवाद की आलोचनाएँ की है

1. भारतीय दर्शन में शंकराचार्य की आलोचना प्रसिद्ध है और अनुयायियों के युग में पाश्चात्य वस्तुवादियों की। बौद्ध विज्ञानवादियों के विरुद्ध शंकर कहते हैं कि (क) बाह्य जगत का हमें प्रत्यक्ष ज्ञान होता है इसलिए सत्ता को इनकार नहीं किया जा सकता। (ख) यदि प्रत्यय को अस्वीकार किया जा सकता है तो सभी कथाओं को भी सत्य नहीं कहा जा सकता क्योंकि इनका भी तो प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। (ग) यदि बाह्य जगत को नहीं स्वीकार करते हैं तो यह कहना कि "मन के प्रत्यय बाहरी पदार्थों की तरह दीखते हैं" निरर्थक हो जाता है। इन तर्कों के द्वारा शंकर बताते हैं कि विश्व को प्रत्ययों का समूह नहीं माना जा सकता।

2. प्रत्ययवाद की मुख्य समस्या भौतिक जगत की व्याख्या है। बर्कले ने कहा है कि भौतिक पदार्थ मूलतः भौतिक नहीं बल्कि प्रत्ययों का समूह है। प्रत्ययों की उत्पत्ति कारण को वे ईश्वर को मानते हैं, किन्तु बर्कले जैसे अनुभववादी के लिए ईश्वर और स्थायी आत्मा जिनका कभी अनुभव नहीं होता है, को मानना न्यायोचित नहीं होता है को मानना न्यायोचित नहीं है।

यदि भौतिक द्रव्य को अनुभूत न होने से असत्य कहा जा सकता है तो ईश्वर और स्थायी आत्मा को भी क्यों नहीं असत्य कहा जाय ?

3. हीगल और उनके अनुयायी ज्ञान की संभावना से विश्व को ज्ञान स्वरूप अर्थात आध्यात्मिक सिद्ध करते हैं। लोईटबे भी ज कहते हैं कि वस्तुओं का विस्तार यथार्थ नहीं है बल्कि अस्पष्ट ज्ञान का परिणाम है। ऐसा कहकर वे समझते हैं कि विस्तार की व्याख्या हो गया। किन्तु उनका सुझाव सिर्फ दलील भर मालूम पड़ता है। क्या विश्व के सभी मनुष्यों का ज्ञान अस्पष्ट है कि विस्तार सत्य दीखता है।

4. ग्रीन कहते हैं कि विश्व के व्यवस्थित रूप के लिए एक परम आत्मा आवश्यक है। इससे तो यही प्रमाणित होता है कि एक परम आत्मा है और अनेक पदार्थ हैं जिनको वह एक विशेष क्रम से संबंधित करता है। अर्थात आत्मा ही एकमात्र सत्ता नहीं है।

5. प्रयोजन वा हेतुओं के तर्क के विषय में भी हमें यही कहना है कि इससे आत्मा की एकांतिक सत्ता । सिद्ध

नहीं होती। आपने से भिन्न तत्वों से विश्व की रचना करके भी बाह्य सामंजस्य स्थापित कर सकती हैं किन्तु बाह्य के अतिरिक्त भिन्न पदार्थों की वास्तविक मान्यता ही प्रत्ययवाद की जड़ काट जाती है। प्रत्ययवाद की उपर्युक्त समीक्षा के आधार पर कह सकते हैं कि चेतनमात्र को परमार्थ मानकर भौतिक जगत की व्याख्या नहीं हो सकती। शंकर इस तथ्य को अच्छी तरह समझते हैं इसलिए वे यह नहीं सोचते की विश्व की उत्पत्ति कैसी होती है बल्कि वे सोचते हैं कि विश्व की प्रतीति क्यों होती है? इसके उत्तर में शंकर कहते हैं कि जिसतरह सत्यज्ञान होने पर भ्रम में अनुभूति सर्प नष्ट हो जाता है, उसीतरह ब्रह्म ज्ञान होने पर विश्व का भ्रम नष्ट हो जाता है और सिर्फ ब्रह्म ही वास्तविक दीख पड़ता है।

इसप्रकार शंकर का अद्वैतवाद प्रत्ययवादी आधार पर विश्व की समुचित व्याख्या कर प्रत्ययवाद का सर्वोत्कृष्ट नमूना प्रस्तुत करता है। इसलिए खास-खास प्रत्ययवादी की असफलता से प्रत्ययवाद की असफलता नहीं घोषित की जा सकती क्योंकि शंकर के प्रत्ययवाद में विश्व की व्याख्या भी दर्शन का उद्देश्य है पूरी हो जाती है।